CW
23/6/21

कर्ण का मित्र प्रेम

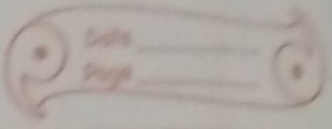

1st Stanza

हे कृष्ण! जरा यह भी सुनिए, सच है कि झूठ मन में गुनिये धूलों में मैं था पड़ा हुआ, किसका सनेह पा बड़ा हुआ? किसने मुझको सम्मान दिया, नृपता दे महिमान्वित किया?

शब्दार्थ -

गुनिए - सोचना, विचार करना।

सनेह - स्नेह

नृपता = राजा - सा सम्मान।

महिमान्वित = गौरवशाली, प्रतापी

C.W
24/6/14

2. है ऋणी कर्ण का रोम-रोम,
जानते सत्य यह सूर्य-सोम,
तन मन धन दुर्योधन का है,
यह जीवन दुर्योधन का है।
सुर पुर से भी मुख मोड़ूँगा
केशव! मैं उसे न छोड़ूँगा

शब्दार्थ

ऋणी - कर्जदार

सोम - चंद्र

सुरपुर - स्वर्ग

तन - शरीर

शब्दार्थ

नर- पुरुष

मही- धरती

तरु- पेड़, वृक्ष

कुठार- कुल्हाड़ी

अनमोल- अमूल्य

रतन- रत्न

बिसात- हस्ती, शक्ति, सामर्थ्य

न्योछावर - अर्पित, कुर्बान